Indian Streams Research Journal
Vol -3 , ISSUE –2, March.2013
ISSN:-2230-7850
Available online at www.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

नयी समीक्षा

कल्पना मा. व्हसाले

हिन्दी विभाग प्रमुख, स्वा.रा.ती. महाविद्यालय,

अंबाजोगाई जि. बीड

प्रास्ताविक-

नयी समीक्षा का अर्थ बिना सोचे समझे लगाया जाता है, कि इस शब्द में कितनी विविधता है। इस शब्द के प्रचलनसे यह स्पष्ट होता है कि इस युग के आलोचकों मे चाहे कितनीही भिन्नता क्यों न हो। वे पूर्व के आलोचकों से कुछ भिन्न मतस्पष्ट करते है। इसलिए नयी समीक्षा की जगह विश्लेषणात्मक आलोचना सौंदर्यपरख रुपवाद आदि नाम भी सुझाए गये जो नये आलोचकों की व्यवहारवादी प्रकृति को स्पष्ट करता है।

स्पिन्गाबारने १९११ ई में पहलीबार नयी समीक्षा नाम का प्रयोंग किया। १९१३ मे क्रोंचे ने नयी समीक्षा पर एक निंबन्ध लिखत` हुए यह कहा था कि स्वच्छन्दतावादी, परम्परावादी, समाज शास्त्रीय, जीवनचरितात्मक, मार्क्सवादी, मनोवैज्ञानिक समीक्षा आधुनिक समीक्षा के लिए सीमीत है। यह नाम आगे अमेरिका समीक्ष को व्दारा स्वीकार किया गया। १९४१ मे जॉन क्रो रैन्समने नयी समीक्षा नामक पुस्तकही प्रकाशित किया। हर नया आन्दोलन अपने पुर्ववर्ती परम्परा का विरोध करता है इसलिए वह आक्रमक माना जाता है। नयी समीक्षा को भी संघर्ष करना पडा। समीक्षकों ने पुरानी पध्दतीको स्पष्ट रुपसे नकारा और उसके स्थानपर पध्दतीमुलक भाषाशास्त्रीय अध्ययन को स्वीकार किया। कृति की आन्तरिक विशेषता और संगठन से उपलब्ध तथ्यही ग्राहय है। अर्थात अपने समय के जड मान्यताओं का विरोध करके नयी समीक्षा को प्रतिष्ठित करने का प्रयत्न किया।

नयी समीक्षा का आरंभ जिस युग मे हुआ, वह वैज्ञानिक विकास और औद्योगीकरण की तीव्र प्रगति का युग था। दुसरे और तिसरे दशक में इस आलोचना का सुत्रपात हो चुका था। किन्तू उसका सैष्पन्तीक रुप चौथेदशक में उमडकर आया। नयी समीक्षा की प्रमुख प्रवृतियाँ टी.एस. इलियर की द सेक्रेड वड (१९२०), मिडलटन मरे कि द प्राब्लम ऑफ स्टाइल (१९२२) और आइ. ए. रिचडर्स की प्रिसिपल्स ऑफ लिटरेरी क्रिटिसिजय (१९२४) कि रचनाओं मे मिल रही थी। अर्थात इलिटाटसे ही नयी समीक्षा का आन्दोलन शुरु हुआ।

क्लेंथ ब्रुक्स को नयी समीक्षा मे विशेष स्थान का अधिकारी माना जाता है। उनका कहना है कि किसी नये सिध्दान्त के प्रतिपादन के स्थान पर दूसरों के सिध्दान्तो के सफल संयोग के व्दारा उसके व्यवहार पक्ष का स्पष्ट उदघाटन आलोचक का प्रमुख धर्म है। ब्रुक्सने आलोचना के व्यवहारीक पक्ष को समृध्द किय। ब्रुक्स

ने कविता का विवेचन कविताके रुप में करना चाहा और उन्होने संरचना की तीन विशेषताएँ बताई १) वैदग्ध २) विरोधाभास और ३) वक्रता कविता किसी एक चित्रवृतिसे सम्बन्धीत न रहकर परिस्थिति के अनुसार उसमें परिवर्तन होता है तथा विशिष्ट परिस्थितीसे सम्बधित चित्रवृत्तियों समेट लेती है । यह प्रवृत्ति कवितामें नाटकिय तत्व के कारण समाविष्ट होती है । और कविता प्रौढ बनकर सस्ती बननेसे बचती है । विरोधाभास के व्दारा स्थिति विशेष के प्रति संकीर्ण और व्यापक दृष्टि की विषमता को स्पष्ट किया जाता है । वक्रता याने गत्यात्मक अर्थ की स्वीकृति साहित्य में वक्रता का सम्बन्ध भाषासे आता है । ब्रुक्स के अनुसार विरोधाभासों का अभ्युदय काव्य की मूल प्रकृति से होता है । काव्य की भाषा विरोधाभास की भाषा होती है और इसमें अनेकार्थता, रुपक और व्यंग्यात्मक विषमता का पुट होता है ।

सरंचना का संबंध अर्थ मुल्यांकन और व्याख्या तीनों से स्थापित होता है । समुची संरचना का केन्द्र बिन्दु आन्विति या सामंजस्य सिध्दान्त है । इसे चित्तवृत्तियों, अर्थो और लक्ष्यायाँ का सामंजस्य सिध्दान्त भी कहा जाता है ।

जॉन क्रो रैन्सम का नाम कम उल्लेखनीय नही है । इन्होने सन १९३० मे गॉड विदाउट थण्डर नामक पुस्तक प्रकाशित की जो नयी समीक्षा का दस्तावेज साबीत हुआ । १९४१ में नयी समीक्षापर विस्तारसे लेख लिखा । रैन्सम कला की स्वतन्त्रता में पूर्ण विश्वास रखते थे । विज्ञान और कला को भाषा की दृष्टिसे भिन्न मानते थे । उनका शब्दविधान (Texture) अर्थविधान (Structure) सम्बन्धी मान्यता विशेष महत्वपूर्ण है । कविताकी निर्मिती कीसी भवन के निर्माण के समान है । उसका अपना एक अलग नकाशा होता है । उनके अनुसार कविता का अर्थ विधान उसका आर्ग्युमेण्ट या व्याख्येय अर्न्तवस्तू होता है और शब्दविधान उसे समझने का प्रमुख साधन है । रेन्समने छन्द और अर्थ में परस्पर घात प्रतिघात और समन्वय की स्थितिपर भी विचार किया है । तथा भाषा के चार प्रमुख साधनों का उललेख किया है । १) विशिष्ट या प्रत्यक्ष शब्द जिनके माध्यमसे वस्तूओं और घटनाओं की सजीव मुर्तता को व्यक्त किया जाता है । २) बौध्दिक सधनता को आश्रय देने के लिए उद्येष्यहीन शब्दों का प्रयोग किया जाता है । ३) लाक्षणिक शब्दों के व्दारा समानता या साहाचर्य के आधारपर विजातीय सामग्रीका समावेश संभव होता है, और ४) अन्तिम साधन धन्द है जिसके माध्यमसे मानवीय सवेंग और अनुभव संग्रहपर ध्यान दिया जाता है ।

रैन्समने काव्य की तीन कोटीयाँ निश्चित की है ।

१) शुध्दकविता या भौतिक कविता २) अध्यामिक या विचार प्रधान कविता ३) अलौकिक कविता । रैन्समने आलोचक के गुण-धर्म पर गंभीरता से विचार किया है । उनकी दृष्टि में पाण्डित्यपूर्ण शैली के स्थान पर काव्यात्मक शैली को, वैज्ञानिक पध्दतिपर आश्रित वस्तूनिष्ठ विधि को आलोचना के लिए आवश्यक माना है । समीक्षक रचनासे प्रभाव ग्रहण करता है किन्तू उसकी आलोचना केवल उन प्रभावों को स्पष्ट करना नही है । इससे वह भी सृजन काही कार्य बनता है । आलोचक का कार्य तो सिध्दान्तो को अधिकसे अधिक यथार्थ और निर्वेयक्तिक बनाना है । दूसरों के माध्यमसे समीक्षक रचना की पूरी जानकारी प्राप्त नही कर पाता समीक्षक को चाहिए वह रचना को स्वयंपढे, समझे, विचारे जिससे उचित रुपमें वह रचना का मुल्याकन कर सके और उनका सही परिचय करा सके ।

इसके बाद एलेन टेट की मान्यतासे आधुनिक समीक्षा को अधिक गति मिली । टेटने तनाव सिध्दानत का विश्लेषण किया । तनाव शब्द विशिष्ट लाक्षणिक अर्थ में प्रयोग मे लाया गया है । टेट के अनुसार शब्द के अर्थ संकेत दो प्रकार के होते है । १) बहिर्मुख २) अन्तर्मुख बहिर्मुख का सम्बन्ध गोचर जगत के साथ होता है । तो अन्तर्मुख संकेत में भावना या विचार को वहन करने की क्षमता होती है ।

विमसाट का सार्वभौम सिध्दानत भी महत्वपूर्ण है । विमसाटका कहना है कि कवि अपने कर्म के व्दारा भुर्त बिम्बों की रचना करते है । यह बिंब अस्थित्वमय होते है । इन्हे हम देख्र सुन सकते है फिर भी वे वही तक सीमित नही होते । ये अपने से परे कुछ और बताते है। इस प्रकार उनमे सामान्य और सार्वभौम तत्व समाविष्ट होते है । विमसाट की दृष्टि मे कविता का भावार्थ सार्वभौम होता है और शब्द विधान सामान्य होता है । कविता मे हमेशा अमुर्तभाव के लिए मुर्त या स्पष्ट उपादान का प्रयोग किया जाता है । इससे कविता में जटीलता निर्माण होती है । और यही जटिलता उसकी कलात्मकता का हेतु होती है ।

बलैकमेलर नयी समीक्षा के आलोचक है । उन्होने अपनी आलोचना मे कई तत्वोंपर प्रकाश डालकर शब्दप्रयोग का महत्व विशद किया है ।

उपयुक्त विवेचनसे यह स्पष्ट होता है की सर्व प्रथम नये समीक्षकोने स्वच्छदवादी प्रवृत्तियों का विरोध करते हुए उन सबका तिरस्कार किया जो अव्यवस्थित पलायनवादी, दुरुह क्षीण और इस सबके साथ भावूक भी था । मार्क्सवादी चिंतको व्दारा साहित्य को प्रचार का साधन बनानेका प्रयास किया जा रहा था उसका भी विरोध हुआ तथा साहित्यिक अध्ययन का मुख्य दायित्व कृति अर्थात केंद्र को आलोकीत करना है ऐसा आर. डब्ल्यू. स्टॉलमेन ने कहा ।

नयी समीक्षा का उदय स्वच्छन्दतावाद के विरोध में नही हुआ । १९ वी शती के उत्तरार्ध और २० वी शती के पूर्वार्ध में ज्ञान-विज्ञान की विविध शाख्राओं के व्यापक और तीव्र प्रसार ने भी कलाकृति की प्रकृति और कार्य के सम्बन्ध में नयी समीक्षा को नयी दृष्टि दी । इतिहास शास्त्र मनोविज्ञान, सौंदर्यशास्त्र और अर्थविज्ञान आदि नें कलाकृति की प्रकृति पर नया प्रकाश डाला ।

नयी समीक्षा में संप्रेषण के माध्यम के रुप मे भाषा की प्रकृति की पहचान पर अधिक बल दिया गया । नयी समीक्षा में कृति की समझ के लिए साहित्य की पृष्ठभूमि और ऐतिहासिक सामाजिक वातावरण पर अतिरिक्त बल देने का विरोध किया गया । और क्रांतिकारपर ध्यान देने का भी विरोध किया ।

इस प्रकार नयी समीक्षाने आलोचना में कविता के विस्तृत विश्लेषण और घनिष्ठ पाठ की परम्परा कायम की । नये समीक्षक निर्विवाद रुप से कविता की स्वायत्तता और स्वतंत्रता के विषय में एकमत थे । हर स्वायत्त और स्वतंत्र वस्तू का रुप होता है । इसी रुप के समुचित विश्लेषणव्दारा कविता को भली प्रकार समझा जा सकता है । नयी समीक्षा के पूर्व समीक्षा के ख्रेत्र में समीक्षा रचना की कम और रचनेत्तर पर मानदण्डों की अधिक चर्चा की जाती थी । अन्वितिही कविता के रुप सौदर्य की जनक है कविता की आत्मा की तलाश में समीक्षक इस अन्विती की अवहेलना करते है । इस कारण हम उसकी संरचना के अन्तर्निहित प्रक्रिया के उस ज्ञान से वंचित हो जाते है जो उसे समझने में अत्यावश्यक है । कविता की संरचना का मूलाधार उसका शब्दार्थ विधान है, भाषा विधान है । काव्यभाषा के विभिन्न घटको के विश्लेषण और उनके अन्तसंबंध की गवेषणा के व्दारा ही कविता की संरचना सामने आ सकती है । यीटस ने कहा था, सब कुछ शब्दों मे है । पाउण्ड ने शब्दाआडंबर को ध्वस्त करके विचार मुक्ति और अमूर्तता के आत्मबल को ध्वस्त करके तत्वमुक्ति का संदेश दिया था यह संदेश नये समीक्षकों के प्रयास में पूरी तरह सामने आया है ।

संदर्भ ग्रंथ -

१) सिध्दान्त और अध्ययन /गुलाबराय

२) भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र का विवेचन / चौधरी सत्यदेव

३) पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिध्दान्त - कृष्णदेव शर्मा

४) हिंदी आलोचना / भगवत्सस्वरुप मिश्र

५) आ. रामचंद्र और हिंदी आलोचना / डॉ. रामविलास